2 जुलाई 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 7 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देशभर में शिक्षण शिविरों की धूम

ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर मई एवं जून माह में पूरे देशभर में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। इन शिविरों के अन्तर्गत भिण्ड के नेतृत्व में 73 स्थानों पर ग्रुप शिविर एवं पिड़ावा, नातेपुते, सनावद, बीना में बाल एवं युवा संस्कार शिविर लगाये गये। इन ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के द्वारा हजारों बालकों ने जैनधर्म के सिद्धान्तोंका ज्ञान प्राप्त किया।

(1) भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 14 जून तक ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सानिध्य में दसवाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर से 75, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 7, श्री आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा से 20, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिर से 5, आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली से 16, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन से 2, भूतपूर्व शास्त्री 21, अन्य ब्रह्मचारी, विदुषी बहिन, विद्वान 31 व स्थानीय विद्वान 73 इसप्रकार कुल 249 विद्वानों के सहयोग से तत्त्वप्रचार किया गया।

यह शिविर मध्यप्रदेश के 7 जिलों (भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ़, गुना, नरसिंहपुर) तथा उत्तरप्रदेश के 7 जिलों (इटावा, औरया, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा, झाँसी, ललितपुर) इसप्रकार 14 जिलों के विभिन्न 73 स्थानों पर एक साथ आयोजित किया गया।

इस शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया था जहाँ कोई विद्वान नहीं पहुँच पाता है। इस शिविर में सभी वर्गों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया गया था। सभी 73 स्थानों पर प्रतिदिन प्रातः सामूहिक पूजन/विधान, कक्षायें, दोपहर में सामूहिक कक्षा, सायंकाल कक्षा, भक्ति, प्रौढ कक्षा, प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। इस शिविर के निरीक्षण हेतु 15 विद्वानों की 5 निरीक्षण टीम बनाई गई। शिविर के माध्यम से 5878 बालक-बालिकाओं तथा 2346 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 3 जून को एवं समापन समारोह दिनांक 14 जून को श्री 1008 सीमंधर जिनालय, देवनगर में किया गया।

इस शिविर के निर्देशक पण्डित अनिलजी शास्त्री, प्रमुख संयोजक पुष्पेन्द्रजी जैन, संयोजक पण्डित समर्पणजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित सचिनजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित रविजी शास्त्री गोरमी, पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी थे। **- पुष्पेन्द्र जैन**

(2) पिड़ावा (राज.) : यहाँ दिनांक 2 से 10 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल', पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित अशोकजी मांगुलकर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में बाल, युवा व प्रौढ - इसप्रकार तीन कक्षायें लगीं, जिनमें 250-300 विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

इस अवसर पर पण्डित अनिलजी 'धवल' एवं पण्डित दीपकजी भोपाल के निर्देशन में सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

(3) नातेपुते (महा.) : यहाँ दिनांक 29 मई से 5 जून तक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रशांतजी शेटे, पण्डित संजयजी राउत, पण्डित वीतरागजी, पण्डित कृतिकुमारजी, पण्डित प्रशांतजी पाटील, पण्डित धवलजी गांधी, पण्डित प्रीतेशजी कोठारी आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में प्रतिदिन नित्यनियम पूजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। इस अवसर पर गुणस्थान विवेचन, बालबोध पाठमाला भाग 2-3, वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2-3 विषयों पर कक्षायें लगीं, जिनमें अनेक विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

(4) सनावद (म.प्र.) : यहाँ श्री कवरचंद ज्ञानचंद पारमार्थिक ट्रस्ट एवं मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर समवशरण मंदिर में श्रुतपंचमी

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय –

आयोजन का प्रयोजन पहचानें

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

दूसरे शिष्य ने प्रश्न किया – गुरुदेव ! पंचास्तिकाय और प्रवचनसार के उपर्युक्त कथनों में टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने क्या अन्तर स्पष्ट किया है?

जिनसेन ने उत्तर में कहा – ''भाई ! तुमने बहुत उत्तम प्रश्न किया है – सुनो ! यहाँ प्रवचनसार में प्रकरणवश आचार्यदेव ने केवलज्ञान रूप निर्मल पर्याय की प्राप्ति को पूर्ण स्वतंत्र–स्वाधीन सिद्ध किया है और पंचास्तिकाय में कर्म और जीव की विकारी पर्यायों को भी पूर्णतया स्वतंत्र, परनिर्पेक्ष सिद्ध करके स्वतंत्रता की उद्घोषणा करते हुए परकर्तृत्व का पूर्णतया निषेध किया है।''

तीसरे शिष्य ने पूछा – ''ये विकारी पर्यायें अहेतुक है या सहेतुक?''

जिनसेन ने कहा – ''भाई ! निश्चय से विकारी पर्यायें भी अहेतुक ही हैं; क्योंकि – प्रत्येक द्रव्य अपना परिणमन स्वतंत्र रूप से करता है। परन्तु विकारी पर्याय के समय निमित्त रूप हेतु का आश्रय अवश्य होता है, इसकारण व्यवहार से उसे सहेतुक भी कहा जाता है।

ध्यान दें, कर्मों की विविध प्रकृति–प्रदेश–स्थिति–अनुभाग रूप विचित्रता भी जीवकृत नहीं है, पुद्गल कृत ही है। जीव के परिणाम तो निमित्तरूप में मात्र उपस्थित होते हैं, वे कर्मों के कर्ता नहीं।''

पुनः प्रश्न – ''क्या जीव कर्म के उदय के अनुसार विकारी नहीं होता ?''

जिनसेन का उत्तर – ''नहीं, कभी नहीं; क्योंकि ऐसा स्वीकार करने पर तो सर्वदा विकार होता ही रहेगा; क्योंकि संसारी जीव के कर्मोदय तो सदा विद्यमान रहता ही है।''

पुनः प्रश्न – ''तो क्या पुद्गल कर्म भी जीव को विकारी नहीं करता ?''

जिनसेन का उत्तर – ''नहीं, कदापि नहीं; क्योंकि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य की परिणति का कर्त्ता नहीं है।''

जब स्व में ही निज शक्तिरूप षट्कारक हों, तभी वस्तु पूर्ण स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी हो सकती है।

प्रत्येक वस्तु का जितना भी 'स्व' है, वह स्व के अस्तित्वमय है। उसमें पर के अस्तित्व का अभाव है। सजातीय या विजातीय कोई भी वस्तु अपने से भिन्न स्वरूप सत्ता रखनेवाली किसी भी अन्य वस्तु की सीमा को लांघ कर उसमें प्रवेश नहीं कर सकती; क्योंकि दोनों के बीच अत्यन्ताभाव की बज्र की दीवाल है, जिसे भेदना संभव नहीं है।''

शिष्य ने विनयपूर्वक प्रश्न किया :– ''विकारी पर्यायों को भी स्वतंत्र मानने का क्या कारण है, जबकि उनमें कर्म का उदय निमित्त होने से पराधीन कहने का व्यवहार है?''

उत्तर :– ''परकृत मानने से पर के प्रति रागद्वेष की संभावना बढ़ जाती हैं और स्वकृत मानने से अपनी कमजोरी की ओर ध्यान जाता है।

प्रत्येक द्रव्य स्वयं कर्त्ता होकर अपना कार्य (कर्म) करता है और करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण आदि छहों कारक रूप से भी द्रव्य स्वयं निज शक्ति से परिणमित होता है। न तो द्रव्य सर्वथा नित्य है और न ही सर्वथा क्षणिक है; अपितु वह अर्थ क्रिया करण शक्तिरूप है। वह अपने गुणमय स्वभाव के कारण एकरूप अवस्थित रहते हुए भी स्वयं उत्पाद–व्यय रूप है। और भेदरूप या पर्यायरूप स्वभाव के कारण सदा परिणमनशील भी है। यही वस्तु का वस्तुत्व है।

तात्पर्य यह है कि – वह द्रव्यदृष्टि से ध्रुव है और पर्यायदृष्टि से उत्पाद–व्यय रूप है।''

दूसरे शिष्य ने जिज्ञासा प्रगट की – ''यदि यह बात है तो आगम में उत्पाद–व्यय रूप कार्य को पर सापेक्ष क्यों कहा ?''

जिनसेन ने समाधान किया – ''पर्यायार्थिकनय से तो प्रत्येक उत्पाद–व्यय रूप कार्य अपने काल में स्वयं के षट्कारकों से ही होता है, अन्य कोई उसका कर्त्ता–कर्म आदि नहीं है, फिर भी आगम में उत्पाद–व्ययरूप कार्य का जो पर सापेक्ष कथन है, वह केवल व्यवहारनय (नैगमनय) की अपेक्षा से किया गया है।''

पुनः प्रश्न – ''आत्मा की कौन–कौन–सी शक्तियाँ वस्तु के स्वतंत्र षट्कारकों की सिद्धि में साधक हैं ?''

उत्तर :– ''भाई ! तुम्हारा यह प्रश्न भी प्रासंगिक है, वैसे तो

सभी शक्तियाँ वस्तु की स्वतंत्रता की ही साधक हैं, उनमें कतिपय प्रमुख शक्तियाँ इसप्रकार हैं -

१. भावशक्ति :- इस शक्ति के कारण प्रत्येक द्रव्य अन्वय (अभेद) रूप से सदा अवस्थित रहता है। यह शक्ति पर कारकों के अनुसार होनेवाली क्रिया से रहित भवनमात्र है, अत: इस शक्ति द्वारा द्रव्य को पर कारकों से निरपेक्ष कहा है, इससे द्रव्य की स्वतंत्रता स्वत: सिद्ध हो जाती है।

२. क्रियाशक्ति :- इस शक्ति से प्रत्येक द्रव्य अपने स्वरूप सिद्ध कारकों के अनुसार उत्पाद-व्यय रूप अर्थ क्रिया करता है।

३. कर्मशक्ति :- इस शक्ति से प्राप्त होने वाले अपने सिद्ध स्वरूप को द्रव्य स्वयं प्राप्त होता है।

४. कर्त्ताशक्ति :- इस शक्ति से होने रूप स्वतः सिद्ध भाव का यह द्रव्य भावक होता है।

५. करण शक्ति :- इससे यह द्रव्य अपने प्राप्यमाण अर्थात् प्राप्त होने योग्य कर्म की सिद्धि में स्वतः साधकतम होता है।

६. सम्प्रदान शक्ति :- इससे अर्थात् प्राप्त होनेवाले कर्म स्वयं के लिए समर्पित होते हैं।

७. अपादान शक्ति :- इससे उत्पाद-व्यय भाव के उपाय होने पर भी द्रव्य सदा अन्वय रूप से ध्रुव बना रहता है।

८. अधिकरण शक्ति :- इससे भव्यमान (होने योग्य) समस्त भावों का आधार स्वयं द्रव्य होता है।

९. सम्बन्ध शक्ति :- स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वमयी सम्बन्ध शक्ति अर्थात् यह शक्ति अपने से भिन्न अन्य किसी द्रव्य के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखती।

इसप्रकार वस्तु के स्वतंत्र षट् कारकों की सिद्धि में उपर्युक्त शक्तियाँ साधक हैं। इन्हीं से प्रत्येक द्रव्य की सभी पर्यायें कारकान्तर निर्पेक्ष सिद्ध होती हैं।

इस प्रकार महावीर जयन्ती पर आयोजित, विविध कार्यक्रमों के अन्तर्गत सांस्कृतिक संगोष्ठी में अध्यापक और छात्रों द्वारा प्रश्नोत्तर एवं संवादशैली में वस्तु स्वातंत्र्य सिद्धान्त के पोषक षट्कारक विषय को प्रस्तुत किया गया, जिसे श्रोताओं ने ध्यान से सुना, समझा और करतलध्वनि से प्रसन्नता प्रगट करते हुए अनुमोदना की। सभी सक्रिय भाग लेने वाले श्रोताओं एवं वक्ताओं को सरल, सफल, रोचक प्रस्तुति के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया गया। ●

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2014

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 9 अगस्त 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
रविवार 10 अगस्त 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 11 अगस्त 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक - परीक्षा बोर्ड)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन : क्या, क्यों और कैसे ?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल
(राष्ट्रीय महामंत्री : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

जीवन का उद्देश्य –

मानव जीवन की सम्पूर्णता मात्र एक वैभवशाली, प्रभावशाली, सर्वसुविधा सम्पन्न, सात्विक, सदाचारी, यशस्वी, उपलब्धियों से परिपूर्ण, स्वस्थ एवं बलशाली, भरेपूरे परिवार के साथ एक दीर्घ जीवन जी लेने में ही नहीं वरन अपने इस जीवन में अपना (आत्मा का) मूल स्वरूप समझकर, भव-भ्रमण का नाश करके मुक्ति पाने की दिशा में कुछ कदम आगे बढ जाने में है।

फैडरेशन का उद्देश्य –

फैडरेशन का उद्देश्य एक ऐसे संस्कारी, सात्विक, शिक्षित, सम्पन्न और सशक्त समाज की स्थापना है जो अपनी समृद्ध पुरातन आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत और मूल्यों की रक्षा करते हुए उन्हें आगे बढाते हुए अपने सदस्यों को एक आदर्श जीवन व्यतीत करने का माहौल प्रदान करे।

मनुष्य अपना सारा जीवन दो स्थानों पर बिताता है –

1. घर पर परिवार के बीच
2. समाज में सबके बीच

मानव की प्रथम पाठशाला उसका घर होता है और उसका प्रथम गुरु होता है उसकी माँ।

माता-पिता और परिजन प्रतिपल, हर कदम पर बच्चों को प्रभावित करते हैं, अपने हर व्यवहार से बच्चे को कुछ न कुछ सिखाते हैं, चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने।

हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर नहीं जाता है और हम यह मानते हैं कि अरे ! ये तो बच्चा है, ये क्या समझेगा ? बस इसीलिये हम उसके सामने वे बातें और व्यवहार करते रहते हैं जो हम कभी नहीं चाहते हैं कि बच्चा सीखे और करे। परिणाम यह होता है कि अधिकतम वे बातें बच्चे के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण अंग बन जाती हैं जो हमारी कमजोरियां होती है और जिन्हें हम पसंद नहीं करते हैं।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे एक आदर्श नागरिक बनें तो हमें उन्हें आदर्श शिक्षा और संस्कार देने होंगे।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों को आदर्श शिक्षा और संस्कार मिलें तो हमें स्वयं को आदर्श आचरण करना होगा, आदर्श व्यवहार अपनाना होगा ताकि घर में उसे उचित संस्कार मिल सकें, उसके आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण हो सके।

व्यक्ति जब घर के सीमित और संरक्षित क्षेत्र से बाहर निकलता है तो समाज के विस्तृत, विविधता भरे और चुनौतीपूर्ण माहौल में प्रवेश करता है। यहाँ सब पराये और अनजाने लोग होते हैं, विभिन्न संस्कारों, योग्यताओं, रुचिओं, हैसियतों और क्षमताओं वाले लोग जिनके लिए आप न तो उनके अपने हैं और न ही किसी भी मायने में विशिष्ट – इन हालात में उसे कैसी और कौनसी चुनौतियों का सामना करना पडेगा, वह उन चुनौतियों के सामने टिक सकेगा या नहीं, कोई नहीं जानता। उसे किस प्रकार के संस्कारों का कौनसा इन्फेक्शन लग जाएगा, कहा नहीं जा सकता है।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे अपने बालकों को इन निष्ठुर हालातों का सामना न करना पड़े तो हमें उन्हें परिवार की ही तरह एक संरक्षित, सुविकसित, सुसंस्कारित, सक्षम और संवेदनशील समाज प्रदान करना होगा जो उनके जीवन की समस्त सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो कर सके पर उनके सुसंस्कारों पर आक्रमण न करे, उसके चरित्र को दूषित न करे, उसके व्यक्तित्व को कुंठित न करे, उसे जगत की अंधी दौड़ में न धकेल दे। जहाँ होड़ व्यसनों की नहीं संयम की हो, भोगों की नहीं तपस्या की हो, लूटपाट की नहीं त्याग की हो।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अपने लिए एक समाज चाहिए ही चाहिए और जब वह एक अनियंत्रित समाज में प्रवेश करता है तो उसकी विकृतियों को अपने ऊपर लादकर घर लौटता है; क्योंकि उसे मात्र समाज चाहिए ही नहीं वरन उसे उस समाज में आगे भी बढना है, विशिष्ट भी दिखना है। बस इसी क्रम में वह समाज में विशिष्ट से दिखने वाले और नेतृत्व करने वाले लोगों से होड करने लगता है। यदि समाज व्यसनी होगा तब स्वाभाविक ही है कि होड़ भी व्यसनों में होगी। यदि समाज हिंसक है तो होड़ हिंसा में होगी, यथा –

''तू सिर्फ एक पीता है ? मैं तो चार -----; तूने बस एक को मारा, मैंने तो 10 को ठिकाने लगा दिया'' आदि।

इसके विपरीत यदि वह सुसंस्कारी, संयमी और शिक्षित समाज में विचरण करेगा तो होड़ संयम में होगी, शिक्षा में होगी, यथा –

''क्या ? तूने सिर्फ एक उपवास किया ? मैंने तो 5 उपवास किये हैं, क्या कहा ? तूने सिर्फ एक ग्रंथ पढा है ? मैंने तो चार पढे हैं, तू सिर्फ 10 मिनिट स्वाध्याय करता है ? मैं तो पूरे एक घंटे स्वाध्याय करता हूँ। तू वेकेशन में ऊटी जा रहा है ? मैं तो शिविर में जा रहा हूँ। तूने सिर्फ 1000/- रुपये दान दिये, मैंने तो 10,000/- दिये हैं।

यदि हम चाहते हैं कि यह सब हो तो हमें अपने लिये एक ऐसे समाज का निर्माण स्वयं ही करना होगा, प्रयत्नपूर्वक।

बस हम अपने लिये एक ऐसे ही समाज का निर्माण करना चाहते हैं।

एक बात और –

मानव की यह कमजोरी है कि उसे अच्छे से अच्छा, पवित्र से पवित्र काम अकेले करने से डर लगता है, लज्जा आती है और यदि 10-20 लोग उसके साथ हो लें तो उसे खतरनाक से खतरनाक काम करते डर नहीं लगता, घृणित से घृणित काम करते भी हिचक नहीं होती, लज्जा नहीं आती।

हो न हो, यूं आप मेरी इस बात से यकायक सहमत न भी हों; आप सोच सकते हैं कि आखिर ऐस कैसे हो सकता है कि पवित्र काम करने में शर्म आवे और घृणित काम करने में शर्म न आये ?

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी।

यदि आप अपने 20 साल के बालक से कहें कि ''बेटा ! रोज स्नान करके , पीला धोती-दुपट्टा ओढकर, नंगे पांव, घर से मंदिर जाकर भगवान की पूजन किया करो'' तो वह इनकार कर देगा, कहेगा ''शर्म आती है''

वही बच्चा होली के दिन 10-20 साथियों के साथ मिलकर कटे-फटे, बदरंग कपड़े पहिनकर, अपने मुख पर कालिख पोतकर, गधे के ऊपर उलटा बैठकर भरे बाजार में घूमता है तब इसे लज्जा नहीं आती।

आखिर क्यों ?

अरे ! भगवान की पूजन कैसे शर्मनाक काम हो गया और ये हुड़दंग कैसे गौरवपूर्ण हो गया ?

बस, संगत का असर इसे कहते हैं।

जहां साथ मिल गया वहां संकोच टूट गया, जहाँ अकेले पड़ गए वहाँ झिझक गए, ठिठक गए।

यदि हमें हर काम के लिये साथ ही चाहिए तो हमें अपने योग्य साथी तैयार करने ही होंगे। यदि हम ऐसा नहीं कर पाए तो विवश होकर हमें उनके साथ जुड़ना पड़ेगा जो हमें पतन की ओर ले जा सकते हैं।

हमारा-आपका यह संगठन ''अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन'' अपनी इसी सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति करने का एक उपक्रम है।

मैं आह्वान करता हूँ कि स्वयं को, परिजनों को और समाज को पतन के अभिशाप से मुक्त रखने के लिये, एक संस्कारी समाज की रचना के लिये इस संगठन में स्वयं शामिल हों, अन्यों को सम्मिलित करें, अपने यहाँ फैडरेशन की शाखा स्थापित करें, सक्रिय होकर फैडरेशन के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करें और स्व-पर के कल्याण में निमित्त बनें। **(क्रमश:)**

क्या आप तत्त्वप्रचार और तत्सम्बन्धी संगठनात्मक कार्यों में रुचि रखते हैं ?

यदि हाँ ! तो यह सूचना आपके लिये ही है –

हम अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के माध्यम से देशभर में संचालित तत्त्वप्रचार की विभिन्न गतिविधियों के प्रत्येक स्तर (स्थानीय, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय) पर संचालन हेतु रुचिवंत कार्यकर्ताओं को आमंत्रित करते हैं कि वे इन कार्यों में सहयोग हेतु अपने आप को प्रस्तुत करें।

हमारा प्रयास होगा कि आपको आपकी रुचि, योग्यता और कार्यक्षेत्र के अनुकूल जिम्मेदारी सौंपी जा सके और तत्त्वप्रचार के इस महान अभियान में आपका भी महान सहयोग हो।

कृपया अपना नाम, फोन नं. ई-मेल आई.डी. एवं आपकी रुचि का विषय (कार्यक्षेत्र) अवश्य सूचित करें।

संपर्क सूत्र – महामंत्री – अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

फैडरेशन की शाखाओं से...

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वें जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रारम्भ की गई तत्त्वप्रचार की सबसे महत्वपूर्ण योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के सभी संभव उपाय करें –

इसके लिये क्या करें –

(अ) यदि आपकी शाखा में दैनिक स्वाध्याय की गतिविधि न चलती हो तो यह कार्य प्रथम प्राथमिकता से तुरन्त प्रारम्भ करें।

यदि आपके नगर का विस्तार हुआ हो और कुछ लोगों के लिए स्वाध्याय भवन 2 या अधिक किलोमीटर की दूरी पर स्थित हो तो नए स्थान पर एक जगह और स्वाध्याय की गतिविधि प्रारम्भ की जाए, ताकि लोग अधिक दूरी के कारण इसका लाभ लेने से वंचित न हो जाएं।

(आ) यदि आपके यहाँ बालकों के लिये नियमित वीतराग विज्ञान पाठशाला का संचालन नहीं होता हो तो नई पाठशाला प्रारम्भ करें।

(इ) घर-घर जाकर समाज के बन्धुओं को व्यक्तिगत रूप से स्वाध्याय की गतिविधियों और पाठशाला से जुड़ने के लिये प्रेरित करें।

(ई) विभिन्न अवसरों, विशेषकर पर्वों के अवसर पर स्थानीय या आमंत्रित बाहरी विद्वानों के विशिष्ट विषयों पर व्याख्यानों का आयोजन किया जाए और व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करके नए-नए लोगों को इन व्याख्यानों में आमंत्रित किया जाए, जिससे उन्हें वस्तु स्वरूप सुनने-समझने और अपनाने का अवसर मिल सके।

(उ) समय-समय पर अपने नगर के आसपास स्थित तीर्थस्थलों या विशिष्ट स्थलों की यात्रा या पिकनिक के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिनमें अधिक से अधिक संख्या में तत्त्वज्ञान से अपरिचित जैन बन्धुओं को आमंत्रित कर सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाए और वहां स्थानीय या विशिष्ट आमंत्रित बाहरी विद्वानों के प्रवचनों के आयोजन करके उन्हें आत्मकल्याणकारी वस्तु स्वरूप की बात सुनने का अवसर प्रदान किया जाए।

(ऊ) अपने मित्र वर्ग और व्यापार आदि से सम्पर्क रखने वाले लोगों को सरल सत्साहित्य भेंटकर उसके पढने की प्रेरणा दी जाए। अवसर मिलने पर उनसे उक्त विषय पर चर्चा की जाए। यह कार्य उनमें तत्त्व की समझ विकसित करने में उपयोगी हो सकता है।

(ऋ) अन्यान्य अवसरों पर मित्रों और सम्बन्धियों को दी जाने वाली भेंट की वस्तुओं में सत्साहित्य और सरल आध्यात्मिक व्याख्यानों की सी.डी. जैसी वस्तुओं को शामिल किया जाए और अन्य लोगों को भी ऐसा करने की प्रेरणा दी जाए। **– महामंत्री**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सिद्धभक्ति

23 सातवीं पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तीसरा छन्द इसप्रकार है -

(दोहा)

पै जो हम कछु कहत हैं, शान्ति हेत भगवन्त।
बार बार थुति करन में, नहिं पुनरुक्त भनन्त ।।३।।

हे भगवन् ! फिर भी हम जो कुछ भी अपनी शान्ति के लिए कह रहे हैं; उसमें पुनरावृत्ति बहुत है। इसमें हमें एक बात साहस देती है कि स्तुति करने में जो पुनरुक्ति होती है; उसमें काव्यशास्त्र के अनुसार पुनरुक्ति नामक दोष नहीं लगता।

एक ही बात को बार-बार कहना पुनरुक्ति है। काव्य शास्त्र में एक पुनरुक्ति नामक दोष होता है; जो स्तुति काव्य में, भक्तिकाव्य में लागू नहीं पड़ता।

बातें तो बहुत हैं; क्योंकि आप अनंत गुणों के धनी हो; पर हम उनके बारे में कुछ विशेष नहीं कह सकते; इसलिए उन्हीं बातों को बार-बार दुहराते हैं, पुनरुक्ति करते हैं। खुशी की बात तो यह है कि **काव्यशास्त्र के नियमानुसार स्तुति काव्य में पुनरुक्ति नामक दोष नहीं लगता।**

इसके बाद पूरी जयमाला पद्धरि छन्द में है। उनमें से आरंभिक छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

जय स्वयं शक्ति आधार योग, जय स्वयं स्वस्थ आनंद भोग।
जय स्वयं विकास आभास भास, जय स्वयंसिद्ध निजपद निवास ।।४।।

हे भगवन् ! आप स्वयं की शक्ति के योग्य आधार हो और आप पूर्णत: स्व में स्थित हैं; इसलिए स्वस्थ हैं तथा अपने अतीन्द्रिय आनन्द का भोग निरन्तर करते रहते हैं।

आपने स्वयं के ज्ञानानन्दस्वभावी भगवान आत्मा का ज्ञान करके स्वयं का परिपूर्ण विकास किया है और स्वयंसिद्ध होकर निज पद में निवास कर रहे हैं। इसलिए आपकी जय हो, बारम्बार जय हो।

बार-बार प्रयोग में आ रहे जय और स्वयं शब्द यह बताते हैं कि आपने अपने में जो विकास किया है; वह स्वयं किया है, स्वयं के बल पर किया है; किसी दूसरे का रंचमात्र भी सहयोग नहीं लिया।

इस महान कार्य में दूसरे के सहयोग की व्यावहारिकता भी संभव नहीं है। यही कारण है कि आप निरंतर जयवंत हैं और रहेंगे; क्योंकि इसमें पराधीनता का, निमित्ताधीनता का अंश भी नहीं है।

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

जय स्वयंबुद्ध संकल्प टार, जय स्वयं शुद्ध रागादि जार।
जय स्वयं स्वगुण आचार धार, जय स्वयं सुखी अक्षय अपार ।।५।।

हे भगवन् ! संकल्प-विकल्पों को टालकर आप स्वयंबुद्ध हुए हैं; इसलिए आपकी जय हो। रागादि भावों को जलाकर आप स्वयं शुद्ध हुए हैं, इसलिए आपकी जय हो। स्वयं पवित्र आचरण को धारण करके आप स्वयं गुणवान हुए हैं; इसलिए आपकी जय हो। अपने ज्ञानस्वभाव की साधना करके आप स्वयं अक्षय अपार सुखी हुए हैं; इसलिए आपकी जय हो, जय हो।

उक्त छन्द में यह कहा गया है कि हे भगवन् ! आप स्वयं शुद्ध हैं, स्वयं बुद्ध हैं, स्वयं अनंत गुणमय हैं और स्वयं ही कभी समाप्त न होनेवाले सुख से अपार सुखी हैं। तात्पर्य यह है कि **आप जो कुछ भी हैं, वह सब स्वयं के आधार पर ही हैं।**

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

जय स्वयं चतुष्टय राजमान, जय स्वयं अनन्त सुगुण निधान।
जय स्वयं स्वस्थ सुस्थिर अयोग, जय स्वयं स्वरूप मनोग योग।।६।।

हे भगवन् ! आप स्वयं अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावरूप स्वचतुष्टय और अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख और अनंत वीर्यरूप अनन्त चतुष्टय से शोभायमान हैं; आपकी जय हो।

अधिक क्या कहें आप स्वयं ही अनन्त चतुष्टय के धारी हुए हैं। अनन्त गुण के निधान तो आप अनादि से ही हैं। आप स्वयं अपने अनंत गुणों के खजाने हो; आपकी जय हो।

आप स्वयं स्वयं में स्थित हो, अत: स्वस्थ हो; एक स्थान पर अचल रहने से सुस्थित हो और मन-वचन-काय - इन तीन योगों से रहित होने से अयोग हो, अयोगी हो; इसलिए आपकी जय हो।

आप स्वयं अपने स्वरूप से मनोग्य हो; इसलिए आपकी जय हो, जय हो।

अगला छन्द इसप्रकार है -

(पद्धरि छन्द)

जय स्वयं स्वच्छ निज ज्ञान पूर, जय स्वयं वीर्य रिपु वज्र चूर।
जय महामुनिन आराध्य जान, जय निपुणमती तत्त्वज्ञ मान।।७।।

आपके स्वच्छत्वशक्ति से सम्पन्न ज्ञानस्वभाव में जगत के सम्पूर्ण ज्ञेयों की बाढ़ आ रही है; इसलिए आपकी जय हो।

यह तो सर्वविदित है कि प्रत्येक आत्मा में अनन्त शक्तियाँ हैं, यह भगवान आत्मा शक्तियों का संग्रहालय है। उनमें से ४७ शक्तियों की चर्चा समयसार परमागम की आत्मख्याति टीका के परिशिष्ट में आई है। उनमें एक स्वच्छत्व नाम की शक्ति भी है, जिसके कारण आत्मा के स्वच्छ स्वभाव में सभी ज्ञेय झलकते हैं, प्रतिबिंबित होते हैं।

हे उछलती हुई वीर्यशक्ति से सम्पन्न भगवन् ! आपने स्वयं के वीर्य से कर्मरूपी शत्रुओं को चकनाचूर कर दिया है; इसलिए

आपकी जय हो।

आत्मा में विद्यमान अनन्त शक्तियों में एक वीर्य नामक शक्ति भी है, जिसका काम स्वरूप की रचना करना है। इस वीर्य शक्ति का रूप सभी गुणों में रहता है। इसके प्रभाव से सम्पूर्ण गुण अपना-अपना कार्य करने में पूरी तरह सक्षम हैं, समर्थ हैं।

हे भगवन्! आप महान मुनिराजों के आराध्य हो, इसलिए आपकी जय हो और आप तत्त्व के जानकारों द्वारा मान्य निपुणमति हो, पूर्णज्ञानी हो, सम्यग्ज्ञानी हो, केवलज्ञानी हो; अत: आपकी जय हो।

अरहंत भगवान किसी अन्य की आराधना नहीं करते। अत: यहाँ महामुनि कहकर आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु-इन तीन परमेष्ठियों द्वारा सिद्ध भगवान को आराध्य बताया है। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

(1) दिल्ली निवासी स्व.श्री दीपचंदजी सेठिया के सुपुत्र **श्री जसकरणजी सेठिया** का दिनांक 7 जून को 92 वर्ष की आयु में समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(2) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती वन्दना मोदी धर्मपत्नी श्री अरविन्द मोदी का दि. 24 मई को आत्माराधनापूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। इसके अतिरिक्त विद्वत्गण भी अपनी स्वीकृति शीघ्र ही भेजें। **- महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127**
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पर्व एवं जिनमंदिर के वार्षिक महोत्सव के अवसर पर दिनांक 10 से 14 जून तक श्री पंच बालयति विधान एवं बाल संस्कार व महिला शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, विदुषी राजकुमारीबेन दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर का उद्घाटन श्री दरियावचंदजी एवं डॉ. सुभाषजी जैन खंडवा द्वारा किया गया।

शिविर में खंडवा, बडवाह, महेश्वर, खरगोन, इन्दौर, बैडीयाव आदि स्थानों से लगभग 200 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित अशोकजी उज्जैन व पण्डित रमेशचंदजी गायक इन्दौर द्वारा संपन्न हुये।

महोत्सव के निर्देशक पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली थे।

(5) बीना (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर 'चेतनधाम' में दिनांक 6 से 10 जून तक वनिता बोधिनी शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. प्रज्ञा दीदी दिल्ली एवं ब्र. प्रीति दीदी खनियांधाना द्वारा छहढाला एवं चार अभाव विषय पर कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

इस शिविर में अनेक महिलाओं ने धर्मलाभ लिया।

क्या आप अपने यहाँ वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन करना चाहते हैं ?

क्या आप चाहते हैं कि आपके अपने बच्चे या मित्रों, सम्बन्धियों के बच्चे और गाँव-गली-मौहल्ले में रहने वाले बच्चे भी वीतरागी तत्त्वज्ञान से परिचित हों, सदाचारी व संस्कारी बनें ?

यदि हाँ, तो कृपया हमसे सम्पर्क करें।

इस कार्य में हम आपके सहयोगी बनेंगे।

संपर्क सूत्र - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन,
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें।

यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र भेजे गए हैं परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **- महामंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

स्वीकृति भेजने का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

2 जुलाई 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी : कानजीस्वामी

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

पुण्य और पवित्रता का सहज संयोग कलिकाल में सहज सम्भव नहीं है। जिनके जीवन में पवित्रता पाई जाती है, कोई उनकी बात नहीं सुनता और जिनके समक्ष लाखों मानव झुकते हैं, जिनको सर्व सुविधायें सहज उपलब्ध हैं, वे पवित्रता से बहुत दूर दिखाई देते हैं, जैसे पावनता से उनका कोई सम्बन्ध ही न हो, उन्हें पवित्रता से कोई सरोकार नहीं। स्वामीजी एक ऐसे युगपुरुष हैं जिनमें पुण्य और पवित्रता का सहज संयोग है। उनमें सोना सुगंधित हो उठा है।

वे अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी महापुरुष हैं। एक ओर जहाँ स्वच्छ शुभ्र श्वेत परिधान से सर्वांग ढकी एकदम गोरी-भूरी विराट काया, उस पर उगते हुए सूर्य-सा प्रभा-सम्पन्न उन्नत भाल तथा कभी अन्तर्मग्न गुरुगंभीर एवं कभी अन्तर की उठी आनन्द हिलोर से खिलखिलाता गुलाब के विकसित पुष्प सदृश ब्रह्मतेज से दैदीप्यमान मुखमण्डल व्याख्यान में उनकी वाणी से कुछ भी न समझ पाने वाले हजारों श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किए रहता है; वहीं दूसरी ओर स्वभाव से सरल, संसार से उदास, धुन के धनी, निरन्तर आत्मानुभव एवं स्वाध्याय में मग्न, सबके प्रति समताभाव एवं करुणाभाव रखने वाले, विनम्र पर सिद्धान्तों की कीमत पर कभी न झुकने वाले, अत्यन्त निस्पृही एवं दृढ मनस्वी, गणधर जैसे विवेक के धनी वज्र से भी कठोर, पुष्प से भी कोमल उनका आन्तरिक व्यक्तित्व बड़े-बड़े मनीषियों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है।

काठियावाड़ (आधुनिक गुजरात) की मिट्टी में ही न मालूम ऐसी क्या विशेषता है, जिसने एक ही शताब्दी में ऐसे दो महापुरुषों को जन्म दिया है, जिन्होंने लौकिक और पारलौकिक दोनों क्षितिजों के छोर पा लिए हैं। पहिले थे महात्मा गांधी और दूसरे हैं कानजीस्वामी। एक ने हमें लौकिक स्वतंत्रता का मार्ग ही नहीं दिखाया अपितु स्वतन्त्रता भी प्रदान की है। दूसरा हमें पारलौकिक, अलौकिक, आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का पथप्रदर्शन कर रहा है, स्वयं उस पर चल रहा है, दूसरों को चलने का प्रेरणा-स्रोत बन रहा है। एक साबरमती का संत कहा जाता था तो दूसरा सोनगढ का संत कहा जाता है।

एक बार इन दोनों महात्माओं का मिलन भी हुआ था, जब गाँधीजी राजकोट में स्वामीजी के प्रवचनों में पधारे थे।

(क्रमश:)

अखिल बंसल ऋषभदेव पुरस्कार से सम्मानित

गाजियाबाद : यहाँ दिगम्बर जैनतीर्थ ऋषभांचल में दिनांक 26 मई को 18वें ऋषभदेव पुरस्कार समर्पण समारोह के अवसर पर श्री अखिलजी बंसल को ऋषभदेव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार के रूप में उन्हें प्रशस्ति-पत्र, शॉल एवं 21 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई। श्री जीवेन्द्र जैन द्वारा अखिलजी बंसल का परिचय प्रस्तुत किया गया एवं ऋषभांचल ट्रस्ट के पदाधिकारियों द्वारा श्री बंसलजी को सम्मानित किया गया।

अपनी ई-मेल आई.डी. तथा मोबाइल नम्बर अवश्य भेज दें

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की सभी शाखाओं और सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि फैडरेशन की गतिविधियों और नवीनतम समाचारों की त्वरित जानकारी पाने के लिये अपनी ई-मेल आई.डी. तथा मोबाइल नम्बर हमें भेज दें।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 27 जुलाई से मंगलवार 5 अगस्त, 2014 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127